अध्याय–द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

2.2 पूर्व शोध कार्य का आलकन

- एम.एड. छात्रों द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका :-

सत्त मानव प्रयासों से भूतकाल का एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधायक द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर कार्य बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसी क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान करता है। तो हमारे लिए उससे संबधित साहित्य का अवलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम होता है।

सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा वह पुनः किया जा सकता है। ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को वर्तमान की जानकारी के लिए पश्चात् (भूतकाल) ज्ञान की जरूरत होती है, उसी के आधार पर वर्तमान ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है। पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।

2.2. पूर्व शोधकार्य का आकलन :-

प्रस्तुत अध्याय में ''कक्षा 9वीं विद्यार्थियों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन'' से संबंधित पूर्व किये गये शोध कार्यों को संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन रूप में लिया गया है। जो निम्न प्रकार से है।

2.2.1 एम.एड. छात्रों द्वारा किया .गया अनुसंधान –

1. कु. सुषमा मिश्रा (1992)

''अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक बालिका विद्यालयों में विद्यमान सुविधाओं का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।''

निष्कर्ष –

''भोपाल नगर'' के संदर्भ शीर्षक के अंतर्गत अपना शोध कार्य किया अध्ययन द्वारा यह सिद्ध पाया गया कि विद्यालयीन शिक्षा में अल्पसंख्याक मुस्लिम बालिकाएँ बहुसंख्याक हिन्दु बालिकाओं की तुलना में कम शिक्षा के अवसर का प्रयोग करती है तथा शैक्षिक उपलब्धि भी बहुसंख्यक बालिकाओं की अपेक्षा कम है।

2. कु. राखी सरकार (1993)

''अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक और आर्थिक स्तर का प्रभाव।''

निष्कर्ष –

''भोपाल नगर'' के संदर्भ के अन्तर्गत लघुशोध कार्य किया अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकला कि शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक छात्राऐं की शैक्षिक उपलब्धि को सामाजिक आर्थिक स्तर एवं घर का वातावरण विशेष रूप से प्रभावित करते है।

3. शेख नसरीन रहेमान (1994)

''इन्दौर जिले'' के ''शैक्षिक विकल्प का चयन और अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन।''

निष्कर्ष –

"इन्दौर जिले" में शीर्षक के अन्तर्गत लघुशोध कार्य किया गया। अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकला कि –

- शैक्षिक विकल्प का स्वचयन करने में अस्वीकृत बच्चे और स्वीकृत बच्चों में सार्थक अभिरूचि नहीं पायी गयी।

- स्वीकृत और अस्वीकृत लड़कों में शैक्षिक विकल्प का स्वचयन करने में अंतर पाया गया मगर लडकियों में किसी तरह का अंतर नहीं पाया गया।

- स्वीकृत लड़कियों ने पहली पसंद आदर्श विषयों को दी है, तथा अस्वीकृत लडकियों ने फाईन आदर्श विषयों में कम अभिरूचि दिखाई। तकनीकी को स्वीकृत लडकियों ने दूसरी पसंद दी है और एग्रीकल्चर समाज विज्ञान और वाणिज्य में कम अभिरूची दिखाई है। अस्वीकृत लडकियों की ज्यादा पसंद वाणिज्य एग्रीकल्चर और गृहशास्त्र विषय में पायी गई। मगर विज्ञान में कम पायी गयी।

4. तेजप्रीत कौर (1996)

"शहरी युवाओं की नजर में माता–पिता द्वारा चुनी गई अनुशासन पद्वति का मान्य सामाजिक व्यैक्तिंक कारकों के साथ संबंध का अध्ययन।"

निष्कर्ष–

"लुधियाना शहर" के संदर्भ शीर्षक के अंतर्गत शोधकार्य किया और अध्ययन द्वारा सिद्ध पाया गया कि–

Library

- परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर के अनुसार बच्चों के माता-पिता द्वारा अपनाई गई अनुशासन की पद्धती और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

- बच्चों के जन्म क्रम के अनुसार बच्चों के माता-पिता द्वारा अपनाई गई अनुशासन पद्धती और मान्य सामाजिक लैंगिक कारकों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

- परिवार के अनुसार बच्चों के माता-पिता द्वारा अपनाई गई अनुशासन की पद्धति और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

- माता-पिता की शिक्षा के अनुसार बच्चों के माता-पिता द्वारा अपनाई गई अनुशासन की पद्धति और मान्य सामाजिक व्यैक्तिक कारकों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5. राजेन्द्र शुक्ला (1997-98)

" महिलाओं के प्रति समाज में व्याप्त भेदभाव पूर्ण मान्यताओं की जानकारी प्राप्त करना।"

निष्कर्ष -

"बिलासपूर के संदर्भ शीर्षक के अन्तर्गत अपना शोधकार्य किया अध्ययन द्वारा यह सिद्ध पाया गया कि-

- समाज में फैली भेदभावपूर्ण मान्यताओं का बालिकाओं की अभिवृत्ति पर प्रतिकुल प्रभाव वर्तमान में भी परिलक्षित है।

- शिक्षित परिवारों की तुलना में अशिक्षित परिवारों में इनका प्रभाव अधिक स्पष्ट प्रदर्शित हुआ।

- शिक्षित एवं समाज के उच्च वर्ग में महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण मान्यताओं में परिवर्तन परिलक्षित हुआ। अर्थात विचारों में कुछ परिवर्तन आया है।

- एस.सी., एस.टी. एवं पिछड़ी जातियों में आज भी ये मान्यताऐं अधिक मान्य एवं प्रचलित है।

6. ए.डी. भूमिरिया (1998-99)

''दाहोद व्यक्ती के प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों के जेण्डर के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।''

निष्कर्ष-

- पुरूष और स्त्री शिक्षकों के बीच जातियता अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। स्त्री शिक्षकों से पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गई।

- ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के जातियता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति ग्रामीण शिक्षकों से अधिक सकारात्मक पायी गई।

- उच्च शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की अभिवृत्ति निम्न शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों से अधिक सकारात्मक पायी गई है।

- कम आयु वाले शिक्षकों की अभिवृत्ति निम्न शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों से अधिक सकारात्मक पायी गई।

7. जागृती राय, (1998)

" 1990 से 1998 तक उडिसा के कटक जिले के जगत सिमपूर ब्लाक की कक्षा 5 से 10 की लडकियों को शाला छोड देने की समस्या के कारणों का अध्ययन।"

निष्कर्ष–

"उडिसा के कटक जिले के जगतलिंगपुर ब्लॉक में शीर्षक के अन्तर्गत लघुशोध कार्य किया गया।

- अधिकत्तर लडकियों का कहना था कि उनके पास झाडु लगाना, बर्तन साफ करना, छोटे बच्चों की देखभाल करना, खाना पकाना खेतों में काम करना, पानी लाना, गोबर लाना आदि कार्य रूढिबद्ध तरीके से उनके ऊपर थोप दिये गये है।

8. सुकन्यादास और रेहाना घडियाली

"अभिभावकों का बच्चों के प्रति जातिय भूमिका का समक्ष और रूढिबद्धता का अध्ययन।"

निष्कर्ष –

- आधुनिक अभिभावकों का बच्चों के प्रति व्यवहार और अभिवृत्ति में समानता पाई गई।

- रूढिबद्ध अभिभावकों का बच्चों के प्रति व्यवहार में जातिय रूढिबद्धता पाई गई।

- अभिभावकों की आधुनिकता रूढिबद्ध जातियता का विरोध करती है और बच्चों के प्रति जातियता पक्षपात में कटोती करती है।

9. **मथैयासुगन – (1999)**

''बच्चों के दूरदर्शन देखने पर अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता का अध्ययन।''

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन मद्रास की 6 पाठशालाओं के विद्यार्थियों पर किया गया।

- अधिक आयु वाले छात्र कम आयु वाले छात्रों से अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता से ज्यादा प्रभावित होते हैं।
- लड़कियों पर अभिभावकों का नियंत्रण और मध्यस्थता लड़कों से अधिक पायी गयी।
- अधिक शैक्षिक योग्यता के बच्चों पर अभिभावक का नियंत्रण और मध्यस्थता पर असर होता है।

10. **हर्षद पटेल (2004–05)**

''बच्चों के प्रति अभिभावकों के दैनंदिन व्यवहार में लिंग आचरण का अध्ययन।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन गुजरात राज्य की पंचमहाल जिले के संतरालपुर तहसील तक सीमित है। इस अध्ययन में उन अभिभवकों को चुना गया

जिन्हें एक लड़का और एक लड़की है। जिनके बच्चों की आयु 6 से 14 साल के बीच है।

1. शिक्षित अभिभावक भी लड़कों से रूढ़ीबद्ध काम करवाते है जो पारंपारिक रूप से उनसे जुड़े हुए है।

   जैसे कि लड़कों से घर के बाहर के कार्य कराने है यानी पोस्ट ऑफीस, बैंक, खरीददारी आदि। जबकि घर के अंदर के काम जैसे कि झाड़ू लगाना, बर्तन साफ करना आदि कार्य लड़कियों से करवाते है।

2. अभिभावकों का शिक्षा के लिए बच्चों के प्रति व्यवहार लिंग हितेच्छुक है।

3. अधिकतर अभिभावक में कपड़े पहनने के विषय में लैंगिक पक्षपात देखने को मिला।

4. बच्चों की सुरक्षा और आर्थिक भविष्य के विषय में अधिकतर अभिभावकों में लैंगिक पक्षपात है। अधिकतर अभिभावकों के बैंक में लडको का बचत खाता और बीमा है जबकि लड़कियों का नहीं। आज भी लड़कियों की सुरक्षा और भविष्य को महत्व नहीं दिया जा रहा है।

5. लड़का और लडकी का शैक्षिक पाठ्यक्रम के विषय में अधिकतर अभिभावकों की अभिवृत्ति में 'लैंगिक पक्षपात' देखने को मिला है। जैसे कि नर्स, शिक्षक आदि पाठ्यक्रम लड़कियों के लिए और पायलट, वैज्ञानिक आदि पाठ्यक्रम लडकों को लिए आवश्यक है। किंतु अगर लडकियों में शैक्षिक अभिक्षमता है तो अभिभावक उनको प्रोत्साहन और मदद् देने में लैंगिक हितेच्छुक है।

6. शादी की उम्र के बारे में अधिकतर अभिभावक लड़का-लड़की में समानता नहीं रखते हैं आज के समय में शिक्षित अभिभावक भी शादी के विषय में परंपरागत और रुढ़ीबद्ध अभिवृत्ति रखते है। जो लड़कियों के प्रति पक्षपातपूर्ण अभिवृत्ति को स्पष्ट करता है।

7. अधिकतर अभिभावक लड़का और लड़कीकी बुद्धी और शक्ति समान होती है ऐसा नहीं मानते है। इस तरह शिक्षित अभिभावक भी लड़का-लडकी के बुद्धी और शक्ती के विषय में रुढ़ीबद्ध दृष्टिकोण रखते हुए लैंगिक पक्षपात रखते है।

11. सोलंकी जयेन्द्र सिंह (2007-08)

''समाज में लिंग-भेद पर आधारीत कार्य विभाजन के बारे में विद्यार्थियों का दृष्टिकोण का अध्ययन''

निष्कर्ष-

'' प्रस्तुत शोधकार्य दादर नगर हवेली के ग्रामीण एवं शहरी विस्तार तक सीमित है और यह कक्षा 8वीं विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया है।''

- कक्षा 8वीं के विद्यार्थियों मे लिंग-भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है।
- कक्षा 8वीं के छात्र एवं छात्राऐं में लिंग भेद पर आधारित कार्य-विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।
- कक्षा 8वीं के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में लिंग-भेद पर आधारित कार्य-संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।